# संयुक्त राष्ट्र सुधार और भारत

यह एडिटोरियल द इंडियन एक्सप्रेस में प्रकाशित “UN and the new multilateralism” लेख पर आधारित है। यह संयुक्त राष्ट्र (UN) प्रणाली में सुधारों की आवश्यकता के बारे में विश्लेषण करता है।

## संदर्भ

संयुक्त राष्ट्र (**United Nations- UN**) की स्थापना 75 वर्ष पहले की गई थी, जिसका मुख्य उद्देश्य विश्व शांति और सुरक्षा को बनाए रखना था। यह देशों की विघटन प्रक्रिया तथा एक और विश्व युद्ध को रोकने में सफल रहा है। हालाँकि 21वीं सदी का विश्व उस 20वीं सदी से बहुत अलग है और कई नई समस्याओं और वास्तविकताओं का सामना कर रहा है। वर्तमान मानवीय और आर्थिक नुकसान COVID-19 महामारी से जुड़े हुए हैं जिसकी तुलना प्रमुख युद्धों से की जाती है और यह बेरोज़गारी 1929 की महामंदी (Great Depression 1929) के बाद से किसी भी समय से बदतर है। इसने बहुपक्षीय संयुक्त राष्ट्र प्रणाली से संबंधित चुनौतियों पर प्रकाश डाला है। इसके अलावा इस स्थिति में ट्रांस-नेशनल (उदाहरण के लिये- आतंकवाद, सामूहिक विनाश, महामारी, जलवायु संकट, साइबर सुरक्षा और गरीबी के हथियारों के प्रसार) चुनौतियों की संख्या में वृद्धि की एक सामान्य प्रवृत्ति रही है। संयुक्त राष्ट्र को बहुपक्षीय विश्व व्यवस्था का प्रतीक होने के कारण वैश्विक मुद्दों से निपटने की अधिक आवश्यकता है। इसलिये संयुक्त राष्ट्र में सुधार एक बहुपक्षीय संगठन के रूप में संयुक्त राष्ट्र की प्रभावशीलता को मज़बूत करने के लिये आवश्यक हैं।

## वर्तमान समय में बहुपक्षवाद के विरुद्ध चुनौतियाँ

- **नए शीत युद्ध का उदय:** एक ओर अमेरिका और चीन के बीच संघर्ष और दूसरी ओर चीन तथा रूस के बीच पश्चिम-पूर्व संघर्ष एक नई वास्तविकता बन गई है।
- **विभाजित पश्चिम:** युद्ध के बाद के गठजोड़ों के बावजूद कई वैश्विक मुद्दों पर अमेरिका और उसके यूरोपीय भागीदारों के बीच मतभेद बढ़ रहे हैं।
    - ईरान परमाणु समझौते पर अमेरिका और अन्य शक्तियों के बीच कुछ अंतर बहुत स्पष्ट दिखाई देते हैं।
    - इसके अलावा युद्ध के बाद के बहुपक्षवाद और शीत युद्ध के बाद के विश्ववाद की अस्वीकृति ट्रंप की "अमेरिका फर्स्ट" विदेश नीति के केंद्र में है।
- **संयुक्त राष्ट्र की अप्रभाविता:** संयुक्त राष्ट्र कोरोनोवायरस के वैश्विक संकट पर प्रभावी ढंग से प्रतिक्रिया देने में असमर्थ रहा है।
    - संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में चीन ने संकट की उत्पत्ति और स्रोतों पर एक गंभीर चर्चा को अवरुद्ध कर दिया। जबकि अमेरिका विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा चीन का समर्थन करने के आरोपों को लगाते हुए इससे बाहर हो गया।

## संयुक्त राष्ट्र सुधार के क्षेत्र

- **UNSC की कमी: संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC) अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शांति और सुरक्षा बनाए रखने की प्राथमिक ज़िम्मेदारी के साथ संयुक्त राष्ट्र की मुख्य कार्यकारी संस्था है।**
    - हालाँकि UNSC के पाँच स्थायी सदस्यों द्वारा वीटो शक्तियों का उपयोग सशस्त्र संघर्ष के पीड़ितों के लिये विनाशकारी परिणामों की परवाह किये बिना उनके भू-राजनीतिक हितों को किनारे करने हेतु एक उपकरण के रूप में किया जाता है। जैसा कि सीरिया, इराक आदि में देखा जा सकता है।
    - इसके अलावा यह आज की सैन्य और आर्थिक शक्ति के वितरण को प्रतिबिंबित नहीं करता है और न ही एक भौगोलिक संतुलन को। इस प्रकार 15 सदस्यीय सुरक्षा परिषद की संरचना अधिक लोकतांत्रिक और प्रतिनिधि होनी चाहिये।
    - भारत, जर्मनी, ब्राज़ील और जापान ने मिलकर जी-4 नामक समूह बनाया है। ये देश संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के लिये एक-दूसरे का समर्थन करते हैं।
- **महासभा सुधार:** संयुक्त राष्ट्र महासभा (UN General Assembly- UNGA) केवल गैर-बाध्यकारी सिफारिशें कर सकती है, जो संयुक्त राष्ट्र के अप्रभाव का एक और कारण तथा संयुक्त राष्ट्र सुधार का एक और महत्त्वपूर्ण मुद्दा है।
- संयुक्त राष्ट्र निकायों की आर्थिक और सामाजिक परिषद ने आलोचना की है, क्योंकि यह **IMF** और **विश्व बैंक** जैसी संस्थाओं के प्रभाव की तुलना में कम प्रभावी हो गया है, जिनमें लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं, पारदर्शिता और जवाबदेही का अभाव है।
- **संयुक्त राष्ट्र का वित्तीय संकट:** यह कहा जा सकता है कि संयुक्त राष्ट्र के पास करने के लिये बहुत कुछ है लेकिन इसके पास बहुत कम पैसा है,

क्योंकियह कई सदस्यों की अनिच्छा के कारण समय पर उनके योगदान का भुगतान करने के लिये एक स्थायी वित्तीय संकट में है।
   - जब तक संयुक्त राष्ट्र के बजट में कमी बनी हुई है, तब तक यह प्रभावी नहीं हो सकता है।
- **संयुक्त राष्ट्र शांतिअभियानों में संरचनात्मक कमी:** हालाँकिअंतर्राष्ट्रीय व्यापार, अर्थशास्त्र और मानव अधिकारों को प्रभावित करने वाले अंतर्राष्ट्रीय कानून संधियों की बड़ी संख्या बहुत प्रभावी साबित हुई है, बल के उपयोग को प्रतिबंधित करने वाले कानून कम हुए हैं।
   - इस प्रकार संयुक्त राष्ट्र शांतिअभियानों के लिये संरचनात्मक सुधार करने की आवश्यकता है।

# संयुक्त राष्ट्र प्रणाली और आगे की राह में भारत की भूमिका

UNSC के अव्यवस्थित होने के बावजूद भारत ने एक नए अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक आदेश के लिये विघटन और निरस्त्रीकरण से स्वयं का एक बहुपक्षीय एजेंडा विकसित किया है और इसके लिये काफी राजनीतिक समर्थन जुटाया है। यह वर्तमान में वैश्विक आकृति को आकार देने की संभावनाओं को रेखांकित करता है।

- **UNSC में सुधार:** जैसा कि संयुक्त राष्ट्र के पूर्व महासचिव ने उल्लेख किया है कि "सुरक्षा परिषद के सुधार के बिना संयुक्त राष्ट्र का कोई भी सुधार पूरा नहीं होगा"। इसलिये UNSC के विस्तार के साथ ही न्यायसंगत प्रतिनिधित्व भी वांछित सुधार की परिकल्पना करता है।
   - हालाँकि, यह संयुक्त राष्ट्र सुधारों का सबसे चुनौतीपूर्ण पहलू होगा क्योंकिआमतौर पर पांच स्थायी सदस्यों द्वारा किसी भी महत्वपूर्ण परिवर्तन को रोकने के लिये अपनी शक्ति का उपयोग करते हुए विरोध किया जाता है।
- **संयुक्त राष्ट्र सुधारों के लिये अन्य बहुपक्षीय मंचों के साथ जुड़ाव:** संयुक्त राष्ट्र के वित्त में सुधार के संभावित समाधान में एक 'आरक्षित निधि' या यहाँ तक कि एक 'विश्व कर' की स्थापना कर सकते हैं।
- **राष्ट्रीय हित और बहुपक्षवाद को संतुलित करना:** खासकर ऐसे समय में जब चीन ने सीमा पर आक्रामक मुद्रा अपनाई है, भारत के वर्तमान बहुपक्षवाद का मुख्य उद्देश्य अपनी क्षेत्रीय अखंडता सुनिश्चित करना होना चाहिये।
   - यहाँ भारत, भारत के हितों की सेवा के लिये बहुपक्षवाद का लाभ उठा सकता है। जैसे कि क्वाड देशों के साथ गठबंधन करना या भारत में सीमा पार आतंकवाद को रोकने के लिये पाकिस्तान पर दबाव बनाने के लिये FATF जैसे तंत्र के साथ काम करना।
   - इसके अलावा गुटनिरपेक्ष आंदोलन (Non-Aligned Movement- NAM) में अपनी भूमिका को पुनः स्वीकार करते हुए भारत को अन्य बहुपक्षीय संस्थानों के साथ जुड़ना चाहिये क्योंकियदि संयुक्त राष्ट्र के बाहर नियम बनाने का काम होता है तो नए नियम बनाना भारत के लिये नुकसानदेह नहीं है।

# निष्कर्ष

इतिहास बताता है कि महामारी संकीर्ण स्वार्थ से ऊपर उठने के लिए उत्प्रेरित करती है। इसे वर्ष 1648 में पीस ऑफ वेस्टफेलिया में ब्रेटन वुड्स में सम्मेलनों और वर्ष 1940 में सैन फ्रांसिस्को सम्मेलन में परिलक्षित किया जा सकता है। वर्तमान महामारी संकट के समान है जो विश्व मामलों में परिवर्तनकारी बदलाव का कारण बन सकती है।

इसके अलावा वैश्विक मुद्दों को देखते हुए आज विश्व को पहले से कहीं अधिक बहुपक्षवाद की आवश्यकता है। इस प्रकार संयुक्त राष्ट्र में सुधार करना आवश्यक है। इस संदर्भ में भारत को अपनी प्रणाली में बहुत आवश्यक सुधार लाने के लिये UNSC के अपने गैर-स्थायी सदस्य के अगले दो वर्षों का उपयोग करना चाहिये।

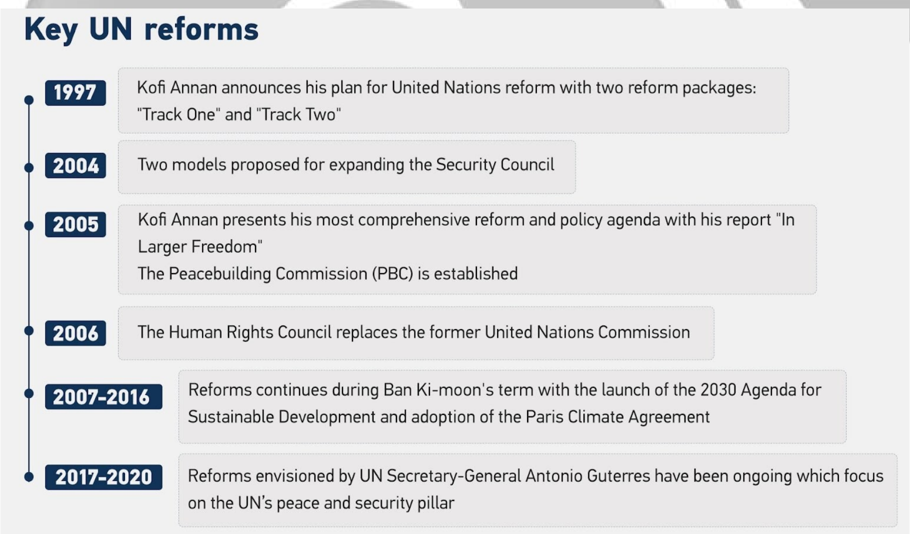


//

**मुख्य परीक्षा प्रश्न:** वर्तमान वैश्विक मुद्दों को देखते हुए आज विश्व को पहले से कहीं अधिक बहुपक्षवाद की आवश्यकता है। चर्चा करें।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/un-reforms-india